बहुत समय पहले मथुरा नगरी में राजा सूरसेन राज्य करते थे। राजा जिनधर्म का अनन्य भक्त था। उनके राज्य में एक भानु नाम का सेठ रहता था। वह सेठ बहुत धनवान था और राजा के समान ही जैन धर्म के प्रति श्रद्धा वाला था। उसकी पत्नी का नाम यमुना था। उनके सात पुत्र थे। संसार से वैराग्य आने पर दोनों ने जिनदीक्षा ले ली। पीछे उनके सातों पुत्रों का क्या हुआ?

यह जानने हम चलते है मथुरा मगरी....

(सातों भाई बैठे हुए है और जुआ खेल रहे हैं। जुआ खेलते हुए सभी ने अपना धन, आभूषण सब नष्ट कर दिए। सब कुछ लुटा कर सभी भाई आपस में बात करने लगे...)

पहला भाई – हमारी सारी सम्पत्ति नष्ट हो गई, अब हम क्या करें?

दूसरा भाई – हाँ भाई, अब तो हमारे खाने – पीने के लिए भी धन नहीं रहा?

तीसरा भाई – काश पिताजी ने इससे भी ज्यादा सम्पत्ति संचय की होती तो हम अभी भी आराम से रह रहे होते।

चौथा भाई – जो हुआ सो हुआ, लेकिन बिना धन के हम नया व्यापार तो नहीं कर सकते?

पाँचवा भाई – लेकिन कोई न कोई काम तो करना ही होगा.....

छठा भाई – (बड़े भाई की ओर इशारा करते हुए) आप ही हम सबमें सबसे बड़े हो तो आप ही बताओ हम क्या करें?

पहला भाई – हमारे पास कोई ओर रास्ता नहीं है, हमें अब से चोरी करना चाहिए....

दूसरा भाई – हाँ....ये सही लगता है, क्योंकि बिना धन के कुछ और कर पाना संभव नहीं है।

तीसरा भाई – लेकिन मथुरा में रहते हुए ये काम ठीक नहीं होगा.....

चौथा भाई – हाँ, मुझे भी यही लगता है....हमे उज्जैन नगरी चलना चाहिए...

सभी जन – हाँ, हाँ, चलो चलो .....

सही कहा गया है – पूत कपूत तो क्यों धन संचय, पूत सपूत तो क्यों धन संचय..... जब पुत्र कुपुत्र हो तो वो प्राप्त धन का दुरूपयोग कर उसे नष्ट कर देगा। जैसा की हमने इन सातों भाइयों के साथ देखा। वास्तव में हमारा एक सही निर्णय ही हमारे सही भविष्य का निर्धारण करता है। इन सातों भाइयों ने धन कमाने के लिए चोरी का मार्ग चुना। अब देखते है आगे क्या होता है.....

(सातों भाई एक साथ उज्जैनी नगरी की ओर चले.....) (शमशान का दृश्य)

पहला भाई – हमें अपना सामान यही रखकर आगे चलना चाहिए....

दूसरा भाई – हाँ, यहाँ रात में कोई आता जाता नहीं है, इसलिए ये स्थान ठीक है।

तीसरा भाई – लेकिन, हमारा यह सामान यही रख देना चाहिए।

चौथा भाई – हाँ, और छोटे भाई को यहीं सामान की सुरक्षा करने के लिए रुक जाना चाहिए।

पाँचवा भाई – *(सातवें भाई की ओर इशारा कर)* भाई, तुम्हे हमारे आने तक यही रुक जाना चाहिए।

छठवाँ भाई – देखो भाई, अगर हम लौट कर न आवें तो तुम यहाँ से भाग जाना

सातवाँ भाई – ठीक है, मैं रात तक यही रुकुंगा।

(सभी जन चोरी करने चले गए और छोटा भाई वहीं शमशान में रुक जाता है ।)

दृश्य – 2

हम पहुँच गए हैं उज्जैन नगरी – राजा वृषभध्वज की नगरी । इस नगरी में दृष्टमुष्टि नामक बलवान योद्धा रहता था । उसके पुत्र वज्रमुष्टि का विवाह मंगी से हुआ । मंगी और उसके पति में बहुत प्रेम था, परन्तु वह अपनी सास की सेवा नहीं करती थी ।

(घर का दृश्य)

सास – हे भगवान ! मेरी तो किस्मत मारी गई, जो मेरे पुत्र की शादी उस मंगी से हो गई । जब से आई है मेरा तो जीना हराम कर दिया है । कोई तो ऐसा उपाय हो जिससे मंगी मर जाये जिससे मेरा पुत्र उस कुलटा से दूर हो जाये ।

(वह एक सर्प को घड़े में रख देती है । थोड़ी देर बाद मंगी का प्रवेश होता है ।)

मंगी – प्रणाम सासु माँ..

सास – हाँ प्रणाम...प्रणाम... सुन मंगी तेरे लिए मैंने एक हार बनवाया है जो उस घड़े में रखा है । उसे निकल कर पहन ले ।

(मंगी प्रसन्न हो कर हार निकालने लगी और उसे सर्प ने डस लिया और वह चिल्लाते हुए मुर्चित हो गई ।)

सास – सेवकों....

(सेवकों का प्रवेश)

सास – सुनों....ये मंगी सर्प के काटने से मर गई, इसलिए इसे उठा कर शमशान में डाल आओ ।

सेवक – जो आज्ञा ।

(सेवक मुर्च्छित मंगी को उठाकर शमशान में डाल देते हैं । थोड़ी देर बाद वज्रमुष्टि घर आया, उसकी माँ दुखी चेहरा बना कर बैठ गई ।)

दृष्टमुष्टि – कहाँ है मेरी प्रिये.... **(कोई उत्तर नहीं आता)** क्या बात है कहाँ छुप गई? **(फिर भी कोई उत्तर नहीं आता)**

सास – (रोने की आवाज) अब वो कभी लौट के नहीं आएगी बेटा....

दृष्टमुष्टि – ये क्या बोलती हो माँ....ऐसा क्या हुआ?

सास – बेटा उसे सर्प ने डस लिया इससे उसने प्राण त्याग दिए और मैंने उसे शमशान में भेज दिया ।

दृष्टमुष्टि – नहीं माँ नहीं.... ये नहीं हो सकता.... मेरी मंगी नहीं मर सकती । मैं उसे अभी लेकर आता हूँ...

(दृष्टमुष्टि शमशान की तरफ दौड़ता हुआ गया)

(कैसी है रागियों की दशा...)

(शमशान के रास्ते में उसे एक मुनिराज मिले, उन्हें वंदना करते हुए उसने कहा..)

दृष्टमुष्टि – हे मुनिराज... यदि मेरी प्राणप्रिया...मेरी मंगी जीवित मिल जाती है तो मैं आपकी भव्य पूजा करूँगा ।
(ऐसा कहकर वह मंगी को ढूंढने चला गया)

(अहो रागियों की दशा, वे वितरागियों से भी भोग – सामग्री की ही इच्छा करते हैं। थोडा आगे जाकर उसे मंगी मिल गई, मुर्छित मंगी को उठाकर वह मुनिराज के समीप ले आया और ऋद्धिधारी मुनिराज के प्रभाव से मंगी का विष दूर हो गया।)

दृष्टमुष्टि – मंगी....तुम ठीक तो हो....

मंगी – हाँ... अब मैं ठीक हूँ।

दृष्टमुष्टि - हे मुनिवर, आप धन्य है.... आपके प्रभाव से मेरी पत्नी जीवित हो गई। सुनो मंगी मैं मुनिराज के पूजन के लिए सामग्री लेकर आता हूँ। जब तक मैं न आऊ, तब तक तुम यही मुनिराज का चरणों के समीप ही रहना।

मंगी – ठीक है... जैसा आप कहे.....

(दृष्टमुष्टि चला गया। उसी शमशान में एक कोने में बैठा हुआ सातवाँ भाई – सूरसेन ये सब देख रहा था। उसके मन में क्या विकल्प आते हैं.... देखते हैं..)

सूरसेन – अद्भुत प्रेम है, इस दृष्टमुष्टि का अपनी पत्नी के प्रति। लेकिन क्या इसकी पत्नी भी इसको इतना ही प्रेम करती है? चलो देखा जाए....

(ऐसा विचार कर वह अपने स्थान से उठकर मंगी के समीप चला गया। प्रथम तो मंगी उसे देखकर चौंक गई, फिर दोनों सहज होकर बात करने लगे)

मंगी – आप कौन है?

सूरसेन – मैं मथुरा के सेठ भानु का पुत्र सूरसेन हूँ। यहाँ से गुजरते हुए मैंने आपको यहाँ अकेले देखा इसलिए आपसे मिलने चला आया।

मंगी – **(मन ही मन में)** कितना सुन्दर रूप है इसका.... काश मेरा पति भी ऐसा सुन्दर रूप वाला होता।

सूरसेन – क्या सोच रही हो....

मंगी – **(मुस्कुराकर)** सोच रही हूँ की मुझे तुम्हारे जैसा सुन्दर पति मिलता तो मेरी किस्मत ही और होती?

सूरसेन – **(हँसते हुए)** मेरे मन में कुछ यही विकल्प आ रहा था, परन्तु तुम्हारे पति के बल को देख कर मेरी इतनी हिम्मत नहीं हुई की तुमसे प्रेमभाव व्यक्त करूँ।

मंगी – हे देव! कृपा कर मुझे अंगीकार करो....

सूरसेन – हे देवी... तेरा पति बलवान योद्धा है, इस कारण में उससे डरता हूँ।

मंगी – हे नाथ... तुम भय मत करो... मैं अपनी तलवार से उसे मार दूंगी...

सूरसेन – ठीक है.... यदि तुम अपने पति को मार दोगी तो मैं तुम्हे स्वीकार कर लूँगा।

(ऐसा कहकर सूरसेन छुप गया और दृष्टमुष्टि के आने का इन्तजार करने लगे। थोड़ी देर में दृष्टमुष्टि लौट आया और आकर पूजन सामग्री ज़माने लगा। तभी पीछे से मंगी तलवार उठाकर उसे मारने को तैयार हुई और उसी समय छिपे हुए सूरसेन ने मंगी का हाथ पकड़ कर दृष्टमुष्टि को बचा लिया और वापिस छिप गया। मंगी अपना दोष छिपाने के लिए वापिस मुर्छित होने का नाटक करने लगी।)

दृष्टमुष्टि – मंगी... मंगी... क्या हुआ तुम्हे....

(वह मंगी को उठाकर घर की ओर ले गया। सूरसेन सामने आया)

सूरसेन – अरे रे.... विचित्र है जगत के प्राणियों की दशा.....

(उसी समय बाकी भाई जो चोरी करने गए थे, वे लौट आये।)

पहला भाई – आज तो बहुत माल हाथ लगा....

दूसरा भाई – हाँ भाई.. आज तो मजा आ गया..

तीसरा भाई – अरे अपना छोटा भाई कहाँ है?

सूरसेन – मैं यहीं हूँ भाई...

चौथा भाई – क्या बात है तु इतना उदास क्यों है?

सूरसेन – भाई... मैंने आज संसार का सही स्वरुप देख लिया है।

पाँचवा भाई – अरे भाई... तुम्हे ये अचानक क्या हो गया... सही से बताओ क्या हुआ?

(सूरसेन ने सारी घटना अपने भाइयों को बताई)

छठा भाई – अरे रे..... धिक्कार है इस जगत की स्वार्थ वृत्ति को.... भाई तुम अब क्या करने वाले हो?

सूरसेन – भाई मैं तो अब इस संसार को छोड़ कर मुनिदशा लेने वाला हूँ...

पहला भाई – भाई... तुम्हारा निर्णय बहुत उत्तम है.... मैं भी तुम्हारे साथ ही इस मार्ग पर चलूँगा।

सभी जन – हाँ हाँ मैं भी.... हम भी....

(और सभी ने सारा सामान वही छोड़कर मुनिराज के सम्मुख मुनिदीक्षा देने का निवेदन किया)